भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3189
शुक्रवार, 06 अगस्त, 2021 को उत्तर दिए जाने के लिए

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का हवाई मानचित्रण

3189 श्री रघु राम कृष्ण राजू :

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या समुद्री तल की बेहतर तस्वीर प्राप्त करने की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (आई.एन.सी.ओ.आई.एस.) का राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एन.आर.एस.सी.) के साथ अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह का हवाई मानचित्रण करने का प्रस्ताव है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और हवाई मानचित्रण करने की क्या आवश्यकता है;
(ग) क्या समुद्र तल के नीचे भूस्खलन की बढ़ती संख्या और ऐसे अन्य अचानक समुद्र/महासागर खतरों के कारण उक्त हवाई मानचित्रण किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(घ) पिछले पाँच वर्षों में हुई प्रगति और उस पर खर्च की गई राशि के संबंध में ऐसी प्रत्येक परियोजना का ब्यौरा क्या हैं?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी, हाँ।

(ख) भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (इंकॉइस) का राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र के साथ मिलकर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के तट के भूमि किनारे (पानी के नीचे नहीं) पर सतह स्थलाकृति के एयरबोर्न लीडर टेरेन मैपिंग (एएलटीएम) करने का प्रस्ताव है। एएलटीएम सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त तटीय स्थलाकृति पर उच्च विभेदन डेटा, सुनामी, तूफ़ानी लहरों, उच्च लहरों आदि जैसे समुद्र खतरों के कारण होने वाले तटीय जलप्लावन के मॉडलिंग और आकलन के लिए उपयोगी है। यह जानकारी पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा सृजित सुनामी तुफानी लहरों और समुद्र की दशा संबंधित चेतावनियों में सुधार लाएगी।

(ग) जी, नहीं। हवाई मानचित्रण प्रस्ताव, पानी के भीतर भूस्खलन में किसी वृद्धि के कारण नहीं है।

(घ) पिछले 5 वर्षों के दौरान, इंकॉइस के साथ किए समझौता ज्ञापन के तहत, एनआरएससी ने लगभग 16.2 करोड़ की लागत से कोच्चि से गुजरात तक भारत के पश्चिमी तट के लिए एएलटीएम सर्वेक्षण किया। इस डेटासेट का उपयोग इंकॉइस द्वारा तटीय बहु-जोखिम आप्लावन मॉडलिंग के लिए पहले से ही किया जा रहा है।

******